

विभेदीकरण संघ, अनुनीति (एनोमी), और गिरोह उप-संस्कृति: किशोर अपराध के समाजशास्त्रीय सिद्धांत किशोर अपराध केवल एक कानूनी समस्या नहीं है, बल्कि यह एक गहरी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जटिलता से जुड़ा विषय है। समाजशास्त्र में किशोरों के आपराधिक व्यवहार को समझने के लिए कई सिद्धांतों का उपयोग किया गया है, जिनमें प्रमुख हैं – **विभेदीकरण संघ सिद्धांत (Differential Association Theory)**, **अनुनीति सिद्धांत (Anomie Theory)**, और **गिरोह उप-संस्कृति सिद्धांत (Gang Subculture Theory)**। ये सिद्धांत यह बताते हैं कि कैसे सामाजिक वातावरण, संबंधों और मूल्यों का प्रभाव किशोरों को आपराधिक व्यवहार की ओर ले जाता है।

1. विभेदीकरण संघ सिद्धांत (Differential Association Theory)

परिचय:

यह सिद्धांत प्रसिद्ध समाजशास्त्री **एडविन एच. सदरलैंड (Edwin H. Sutherland)** द्वारा प्रस्तुत किया गया था। यह सिद्धांत बताता है कि **अपराध सीखा जाता है**, जन्मजात नहीं होता।

मुख्य विचार:

- प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार उसके सामाजिक वातावरण और संपर्कों पर निर्भर करता है।
- जब कोई किशोर उन व्यक्तियों के संपर्क में आता है जो अपराध को सामान्य या उचित मानते हैं, तो वह भी उन्हीं मूल्यों को अपनाने लगता है।
- इस प्रक्रिया में संवाद, दैनिक संपर्क, और रिश्तों की गहराई महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- किशोर अपराध की ओर तब झुकते हैं जब उनके संपर्क में अपराध को समर्थन देने वाले विचारों की मात्रा अपराध विरोधी विचारों से अधिक होती है।

उदाहरण:

यदि कोई किशोर ऐसे मित्रों की संगति में है जो चोरी, झगड़ा या नशा करते हैं और इसे एक 'साहसिक' या 'स्वाभाविक' कार्य मानते हैं, तो वह किशोर भी वैसा ही व्यवहार सीख सकता है।

प्रभाव:

यह सिद्धांत विशेष रूप से यह समझने में मदद करता है कि अपराधी समूहों, गिरोहों और समाज के कुछ विशेष वर्गों में अपराध क्यों अधिक होता है।

2. अनुनीति सिद्धांत (Anomie Theory)

परिचय:

यह सिद्धांत फ्रांसीसी समाजशास्त्री **एमिल दुर्खीम (Émile Durkheim)** और अमेरिकी समाजशास्त्री **रॉबर्ट के. मर्टन (Robert K. Merton)** द्वारा विकसित किया गया।

अनुनीति (Anomie) का अर्थ:

अनुनीति का अर्थ है – सामाजिक मानदंडों का अभाव, विघटन या अस्थिरता। जब समाज में स्थापित मूल्यों और व्यक्तिगत लक्ष्यों के बीच सामंजस्य नहीं होता, तब अनुनीति उत्पन्न होती है।

मर्टन की व्याख्या:

रॉबर्ट मर्टन ने यह समझाया कि समाज सभी व्यक्तियों को सफलता (जैसे धन, प्रतिष्ठा) पाने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन सभी को समान अवसर उपलब्ध नहीं होते।

- जब कोई व्यक्ति वैध साधनों (जैसे – शिक्षा, नौकरी) से लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाता, तो वह **अवैध रास्ते** (जैसे – चोरी, ड्रग्स, तस्करी) अपनाने की ओर प्रवृत्त होता है।
- यह स्थिति विशेष रूप से उन किशोरों में देखी जाती है जो गरीब, उपेक्षित, या सामाजिक रूप से हाशिए पर हैं।

प्रमुख प्रकार:

मर्टन ने समाज में पाँच प्रकार की प्रतिक्रियाओं को पहचाना –

1. **अनुरूपता (Conformity)**
2. **नवाचार (Innovation)** – जब वैध साधनों के अभाव में अवैध साधनों से लक्ष्य प्राप्त किया जाता है।
3. **औपचारिकता (Ritualism)**
4. **विच्छेद (Retreatism)**
5. **विद्रोह (Rebellion)**

उदाहरण:

एक किशोर जिसे अमीर बनने की चाह है, पर गरीबी और शिक्षा के अभाव के कारण उसे वैध रास्ता नहीं दिखता, वह चोरी या नशीली दवाओं की बिक्री जैसे विकल्पों को चुन सकता है।

प्रभाव:

यह सिद्धांत यह दर्शाता है कि **असमान सामाजिक संरचना और अवसरों की कमी** व्यक्ति को अपराध की ओर धकेल सकती है।

3. गिरोह उप-संस्कृति सिद्धांत (Gang Subculture Theory)

परिचय:

यह सिद्धांत समाजशास्त्री **अल्बर्ट कोहेन (Albert Cohen)** और बाद में **क्लोवर्ड और ओह्लिन (Cloward & Ohlin)** द्वारा विकसित किया गया।

उप-संस्कृति का अर्थ:

एक उप-संस्कृति (Subculture) समाज के भीतर वह समूह होता है जो मुख्यधारा की संस्कृति से अलग और कभी-कभी विरोधाभासी मान्यताओं, मूल्यों और व्यवहारों का पालन करता है।

गिरोह उप-संस्कृति की विशेषताएँ:

- ऐसे किशोर जो मुख्यधारा समाज में पहचान और सम्मान नहीं प्राप्त कर पाते, वे गिरोह में शामिल हो जाते हैं।
- ये गिरोह अपनी खुद की संस्कृति, नियम, भाषा और व्यवहार अपनाते हैं, जिनमें अक्सर अपराध, हिंसा, शक्ति प्रदर्शन और वफादारी प्रमुख होती है।
- गिरोह में शामिल होने से किशोर को सामाजिक स्वीकृति, सुरक्षा, और पहचान मिलती है – भले ही वह अपराधिक रास्तों से मिले।

कोहेन के अनुसार:

किशोर अपराध केवल आर्थिक लाभ के लिए नहीं होता, बल्कि कई बार वह **'Status Frustration'** (स्थिति से उत्पन्न कुंठा) से प्रेरित होता है। जब किशोर को स्कूल या समाज से सम्मान नहीं मिलता, तो वह एक ऐसे समूह में चला जाता है जहाँ उसे सम्मान मिलता है – चाहे वह गिरोह ही क्यों न हो।

क्लोवर्ड और ओह्लिन ने कहा:

अपराधी उप-संस्कृति तीन प्रकार की हो सकती है:

1. **अपराधी गिरोह (Criminal subculture)**
2. **संघर्षात्मक गिरोह (Conflict subculture)**
3. **पलायनवादी गिरोह (Retreatist subculture)**

उदाहरण:

शहरी झुगियों या समाज के गरीब वर्गों में किशोर अक्सर छोटे अपराधी समूहों का हिस्सा बन जाते हैं। वे एक-दूसरे से अपराध करते हुए सीखते हैं, सम्मान प्राप्त करते हैं और गिरोह की पहचान का हिस्सा बन जाते हैं।

प्रभाव:

यह सिद्धांत यह बताता है कि जब मुख्यधारा समाज किशोरों को आत्म-सम्मान और अवसर नहीं देता, तब वे वैकल्पिक, अक्सर आपराधिक, उप-संस्कृति का हिस्सा बन जाते हैं।

निष्कर्ष

विभेदीकरण संघ, अनुनीति और गिरोह उप-संस्कृति – ये तीनों सिद्धांत किशोर अपराध को गहराई से समझने में सहायता करते हैं। इनका मूल संदेश यह है कि अपराध **व्यक्तिगत दोष नहीं, बल्कि सामाजिक परिस्थिति और संपर्कों का परिणाम** होता है।

इन सिद्धांतों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यदि समाज बच्चों और किशोरों को सुरक्षा, शिक्षा, सम्मान और अवसर प्रदान करे, तो अपराध की ओर उनका झुकाव कम हो सकता है। इसके लिए पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी शिक्षा, समुदाय की जागरूकता और सरकारी पुनर्वास योजनाएँ मिलकर कार्य करें — तभी किशोरों को सही दिशा दी जा सकती है।